मीठी चीनी...

चित्रः शोभा घारे

दो दोस्त थे। उनमें से एक बेहतरीन संगीतज्ञ था। वह तारों वाला तुम्बा बजाता था। दूसरा दोस्त संगीत सुनने का शौकीन था। जब संगीतज्ञ पहाड़ों की कल्पना में डूबा तुम्बे के तार छेड़ता, सुनने वाला मित्र कह उठता, "ये पर्वत कितने भव्य और सुन्दर हैं।"

जब संगीतज्ञ नदी की धुन तुम्बे पर छेड़ता, सुनने का शौकीन दोस्त कहता, "लहरों की कल-कल मुझे भिगो रही है।"

एक दिन सुनने के शौकीन दोस्त की मौत हो गई। उस दिन संगीतज्ञ ने अपने साज़ के तार काट दिए और फिर कभी संगीत नहीं बजाया।

आज भी चीनी भाषा में साज के तार काटना मुहावरे का अर्थ है – गहरी और अंतरंग मित्रता होना।